शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

महिला सशक्तिकरण का प्रश्न एवं सूक्ष्म वित्तः आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं के सन्दर्भ में एक सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण

डॉ० अजीत कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, अमेठी यूनिवर्सिटी, हरियाणा
ईमेलः *ajeetbhu07@gmail.com*

प्राप्तिः 28.10.2021
स्वीकृतः 26.12.2021

नयनतारा सिंह
रिसर्च एसोसिएट
सी०डब्लू०डी०एस०, नई दिल्ली

सारांश

केवल भारत में ही नहीं, बल्कि दुनिया के ज्यादातर देशों की महिलाएं भेदभाव का शिकार होती आयी हैं। इसके साथ ही हम देखते हैं की वे सभी स्तरों पर निर्णय लेने की प्रक्रिया से बाहर रखी जाती रही हैं एवं वंचित और अधिकार विहीन रही हैं। इसका कारण पितृसत्ता का प्रचलन है। यह एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है, जिसमे पुरुशों को महिलाओं से श्रेष्ठ समझा जाता है, जहां संसाधनों पर, निर्णय लेने की प्रक्रिया पर और विचारधारा पर पुरुषों का नियंत्रण होता है अर्थात महिलाओं को हिंसा या हिंसा की धमकी के माध्यम से नियंत्रित किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, प्रत्येक तीन में से एक महिला हिंसा की शिकार होती है। पूरी दुनिया में जारी यह सबसे बड़ी लड़ाई है। इस लड़ाई को खत्म करने का एक मात्र हथियार यह है कि महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त किया जाए। जिसके लिए सरकार समय–समय पर योजना लेकर आ रही है और इसे लागू भी किया जा रहा है। उन योजनाओं मे से एक है स्वयं सहायता समूह का निर्माण कर स्वयं को मजबूत बनाने का एक अच्छा अवसर का मिलना।

महिला सशक्तिकरण सामाजिक विकास का एक मूलभूत कारक है। हालांकि महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कई और भी कारक है। माइक्रो फ़ाइनेंस इन सारे कारकों मे एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रस्तुत शोध आलेख में इस विषय को व्यापक परिपेक्ष्य में देखने का प्रयास किया गया है।

मुख्य बिन्दु

महिलाएं, पितृसत्ता, आर्थिक सशक्तिकरण, योजना, स्वयं सहायता समूह, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक विकास, माइक्रो फ़ाइनेंस

विश्व बैंक ने 'सशक्तिकरण' को एक खास अर्थ मे परिभाशित किया है। इसके अनुसार, सशक्तिकरण का अर्थ है कि लोग अपनी क्षमताओं एवं संपत्ति का इस तरह विकास करें कि खुद ही उन संस्थाओं पर नियंत्रण एवं पकड़ बना सकने मे सक्षम हो पाए, जो उनके जिंदगी को प्रभावित करती है। या दुसरे शब्दों में कहें तो सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी व्यक्ति को इस तरह स्वायत्त तरीके से कार्य करने मे सक्षम बनाती है कि वह खुद से अपने बारे मे सोच सकें, अपने निर्णय ले सकें और उनपर अमल कर सकें। यह अपनी तय की हुई मंजिल तक पहुँचने के लिए खुद के निर्णायक होने जैसा विश्वास है। सही मायने मे यह प्रक्रिया संसाधनों एवं विचारों दोनों पर ही स्वायत्ता

स्थापित करने के समानार्थी है। यहाँ पर संसाधनों को भौतिक, मानवीय, बौद्धिक एवं वित्तीय अर्थों मे लिया गया है जबकि विचारों से अर्थ उन विश्वाश, मूल्य एवं नजरिया से है जिससे मनुष्य अपने कार्यों को तय कर पाता है (बाटलीवाला, 1994)।

उपरोक्त परिभाषा के अलावे सशक्तिकरण को एक दूसरे अर्थ मे भी देखा जा सकता है। इसको एक साधन के रूप मे लिया जा सकता है जो ऐसे सामाजिक वातावरण का निर्माण बनाने मे सहायक हो जिसमें व्यक्ति अपने बारे मे खुद निर्णय लेने मे सक्षम हो सकें। वह व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से सकारात्मक सामाजिक बदलाव के बारे मे सोचने और उसके लिए जरूरी निर्णय स्वतंत्र तरीके से लेने मे सक्षम हो। यह व्यक्ति को ज्ञान पर अधिकार एवं अनुभव के द्वारा अपने खुद के क्षमताओं को मजबूत बनाती है। वस्तुतः यह एक बहू आयामी प्रक्रिया है जो की लोगों को उन सभी मुद्दों पर सक्रिय भागीदारी के लिय प्रेरित करती है जो उनके जिंदगी को प्रभावित करता है। इससे उन्हें खुद के समुदाय एवं समाज मे उन मुद्दों पर नियंत्रण स्थापित करने मे मदद मिलती है जो की उस समाज और समुदाय मे महत्वपूर्ण मानी जाती है। सशक्तिकरण मनुश्य के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक सभी आयामों से जुड़ी हुई है और कई स्तरों पर लोगों को प्रभावित करती है। सशक्तिकरण की प्रक्रिया कई बार व्यक्तिगत स्तर पर दिखती है तो कई बार यह समूह या समुदाय के स्तर पर परिलक्षित होती है। लेकिन यह हमेशा ही सामाजिक जड़ता, समाज मे व्याप्त गैर बाराबरी के शक्ती सम्बन्धों एवं सामाजिक गतिशीलता के बारे मे हमारी मान्यताओं को चुनौती देती है।

महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया शिक्षा और रोजगार की भूमिका को केंद्र मे लाती है। यह दोनों ही सतत विकास के लिए जरूरी तत्व है। भारत मे ट्रिकल डाउन प्रभाव लैंगिक असमानता की समस्या के प्रभाव को हल करने मे नाकाम रही है। महिलाएं हमेशा से ही समाज मे सबसे कमजोर तबका रहीं है। इसी तबके से गरीबी मे जीने के लिए विवश लोगों का एक बड़ा हिस्सा आता है। महिलाए शिक्षा स्वास्थ्य, एवं रोजगार तक पहुँच मे लैंगिक असमानता से जुड़े हुए विशिष्ट विभेद को झेलने के लिए विवश है। माइक्रो फ़ाइनेंस गरीबी रेखा के नीचे जीने वाले महिलाओं के साथ जुड़ा हुआ है। इसके द्वारा ऋण उपलब्ध कराने का लक्ष्य इसी सामाजिक समूह के लिए किया गया है।

गरीबों मे भी गरीब महिलाएं की स्थिति सबसे ज्यादा बुरी है। इस समूह के पास शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच का अभाव है। यह दोनों ही कारक गरीबी से बाहर निकाल कर कर सामाजिक संरचना मे ऊपर जाने के लिए जरूरी कारक है। भारत जैसे देश मे जहां राष्ट्रिय अर्थ व्यवस्था मे महिला श्रम के महत्वपूर्ण योगदान के वावजूद यह समस्या और जटिल हो जाती है। इस जटिलता के पीछे समाज मे महिलाओं की दोयम दर्जे की स्थिति एवं मुख्य संसाधनों पर पहुँच और नियंत्रण का अभाव होना है। इस विषय पर विभिन्न अध्ययनो से जो प्रमाण मिले है वो बहुत दिलचस्प है। महिलाएं पुरुषों से ज्यादा अच्छे तरीके से संसाधनो का उपयोग एवं प्रबंधन करती है। ऋण को चुकाने मे भी उनका प्रदर्शन पुरुषों से ज्यादा बेहतर है। अगर दिया जाने वाला ऋण महिलाओं के मार्फत होता है तो ज्यादा सही तरीके से उसका उपयोग घर मे होता है। महिला सशक्तिकरण किसी भी समुदाय के सामाजिक आर्थिक विकास की कुंजी है इसलिए सरकार का एक मुख्य लक्ष्य महिलाओं को राष्ट्रिय विकास की मुख्य धारा मे जोड़ना है। ग्रामीण विकास मंत्रालय ने विकास कार्यक्रम मे महिलाओं के लिए विशेष प्रावधान किए है। इन कार्यक्रमों मे विशेष प्रावधान के लिए निश्चित राशी आवंटित किया जाता है जिससे महिलाओं के संसाधन तक पहुँच को सुनिश्चित किया जा सकें। स्वर्ण जयंती ग्रामीण स्वरोजगार योजना के साथ

साथ ग्रामीण विकास मंत्रालय के अन्य विकास कार्यक्रमों मे इस तरह के विशेष प्रावधान एवं राशी आवंटित किए गए है। अन्य कार्यक्रम जैसे की जवाहर रोजगार योजना, इंदिरा आवास योजना, समेकित ग्रामीण विकास कार्यक्रम इत्यादि मे इस तरह के प्रावधान है।

माइक्रो फ़ाइनेंस तुलनात्मक रूप से एक नई शब्दावली है। इसको समान्यतः गरीबी उन्मूलन एवं छोटे उद्यमों को वित्तीय सहायता प्रदान करना एवं लैंगिक विकास की चुनौतियों इत्यादि के संबंध मे उपयोग किया जाता है। लेकिन माइक्रो फ़ाइनेंस की कोई सर्वमान्य आधिकारिक या कानूनी परिभाषा वर्तमान मे नहीं है। माइक्रो फ़ाइनेंस को नियमित करने के लिए बनाए जाने वाले फ्रेमवर्क एवं इसको मदद करने के लिए बनाए जाने वाले नीतियों के लिए एक टास्क फोर्स का गठन किया गया था। उस टास्क फोर्स ने माइक्रो फ़ाइनेंस को निम्नलिखित रूप मे परिभाषित किया है–

ग्रामीण कस्बाई एवं शहरी इलाकों मे रहने वाले गरीब जनता के लिए बचत, ऋण एवं अन्य वित्तीय सेवाओं एवं उत्पादों का प्रावधान जिससे उनकी आमदनी बढ़ सकें जिसका परिणाम उनके जीवन स्तर मे वृदधी के रूप मे होगा। एक सिद्धान्त के रूप मे माइक्रो फ़ाइनेंस समूह के द्वारा बैंकिंग व्यवस्था को नियोजित करना है। इस दृष्टिकोण की मुख्य विशेषता यह है की व्यक्तियों के समूह के द्वारा वित्तीय सेवाए उपलब्ध करवाता है। यह समूह संयुक्त देयता और सह दायित्व दोनों ही को स्वीकार करती है। महिला सशक्तिकरण सामाजिक बदलाव के व्यापक प्रक्रिया का अभिन्न एवं अनिवार्य हिस्सा है। इस प्रक्रिया के केंद्र मे गरीब महिलाएं होती है– ऐसी महिलाएं जो महिलाओं के वैकल्पिक भूमिका के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकें। इसके साथ साथ लैंगिक समानता के लिए पुरुशों के संभावित भूमिका पर भी ध्यान दिया गया है। महिलाओं के सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण के व्यापक संदर्भ मे माइक्रो फ़ाइनेंस को एक प्रस्थान बिन्दु के रूप मे लिया जा सकता है जिसके आगे महिलाओं मे व्यापक पैमाने पर जागरूक करना एवं आगे नारीवादी संगठनो के विकास की और बढ़ा जा सकता है।

उपरोक्त बदलाव के लिए काम करने वाले समूह के काम करने के तरीको मे बहुत कुछ शामिल हो सकता है– जैसे की अवसरों को चिन्हित कर पाना, किसी निश्चित वस्तु के उत्पादन के लिए छोटे उद्योग लगाने से पहले उसके चुनौतियों एवं गलाकाट प्रतियोगिता को समझना इत्यादि। इन मुद्दों पर काम करते हुए ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को इसमे शामिल किया जा सकता है जिससे इसके लाभ को ज्यादा व्यपाक स्तर पर पहुंचाया जा सकें। इस विषय मे संभावित रणनीति यह हो सकती है की वर्तमान मे जारी सेवाओं और आधारभूत संरचनाओं से महिलाओं को जोड़ा जाये। एक और प्रयास ऐसे प्रौद्योगिकी का विकास हो सकता है जिससे महिलाओं को परंपरागत श्रम से बचाया जा सकें। इसी तरह सूचनाओं के प्रसारण के लिए एक मजबूत नेटवर्क स्थापित करना होगा। नए बाज़ारों के विकास मे आने वाली कानूनी अडचनों से निकलने के लिए नीतिगत बदलाव करने की जरूरत होगी। सहभागीता के सिद्धान्त पर आधारित उद्योगों के विकास के लिए जरूरी ज्ञान के उत्तरोतर विकास की दिशा मे बढ़ना एक और कार्यभार हो सकता है जिससे महिलाए बदलाव के लिए जरूरी रणनीति का विकास कर सकें। आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ केवल व्यक्तिगत अर्थों मे नहीं लिया जा सकता है बल्कि इसके साथ यह संपत्ति संबंधी अधिकार, घर के भीतर के सम्बन्धों मे बदलावों और समष्टि अर्थशास्त्र मे किए जाने वाले जरूरी बदलाव को भी समाहित करता है। बहुत से संस्थाए इस दिशा मे आगे बढ़कर सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए उद्योगों के स्तर पर विशिष्ट लैंगिक रणनीति को बढ़ावा देती है।

सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए किए जाने वाले इस तरह के हस्तक्षेप आर्थिक सशक्तिकरण की अनिवार्य शर्त है। महिलाओं के द्वारा कर्ज वापसी की उच्च दरों ने वित्तीय मानको के आधार पर समाज मे व्याप्त लैंगिक मुद्दों को चुनौती दी है। लैंगिक मुद्दों पर जनमत तैयार करने वाले समूह ने इन वित्तीय मानको के आधार पर इस बात की वकालत करने मे सफल रहे है की आर्थिक विकास के लिए महिलाओं के आर्थिक गतिविधि को एक ऐसे संसाधन के रूप मे देखा जाए जिसका समुचित उपयोग नहीं हो पाया है। इस समूह को इस मुद्दे पर सफलता मिली है की महिलाओं को केंद्र मे रखे गए प्रावधानों को माइक्रो फ़ाइनेंस के सेवाओं एवं कार्यक्रमों के मूल्यांकन मे शामिल कर लिया गया है।

उपरोक्त विमर्श के अलावे सशक्तिकरण शब्द का उपयोग व्यापक तौर पर प्रचार प्रसार के साहित्य मे किया जाता है। व्यक्तिकेन्द्रीत शब्दावली मे सशक्तिकरण को दो अर्थों मे लिया जाता है–पहला व्यक्तिगत चुनाव के दायरे का विस्तार हो सके तथा दूसरा आत्म निर्भरता के लिए जरूरी क्षमताओं का विकास कर सकें।

ऐसा माना जाता है कि माइक्रो फ़ाइनेंस सेवाओं तक महिलाओं की पहुंच बढ़ने से वह अपने आप आय में वृद्धि एवं उनके नियंत्रण, बचत और क्रेडिट उपयोग के बारे में फैसला करने मे सक्षम हो पाएँगी। साथ ही साथ माइक्रो उद्यमो को शुरू करने कि पहल करेगी जिससे उनमे आत्म निर्भरता का विकास होगा। यह माना जाता है कि इन सबसे महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण कि प्रक्रिया मजबूत होगी जो अंततः सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा मे ले जाएगी।

महिला सशक्तिकरण के लिए माइक्रो फ़ाइनेंस की अपरिहार्यता

नए आर्थिक परिदृश्य में माइक्रो फ़ाइनेंस गरीबी उन्मूलन के एक कारीगर हथियार के तौर पर उभरा है। भारत मे माइक्रो फ़ाइनेंस मुख्यतः स्वंय सहायता समूह और बैंक लिंकेज कार्यक्रम पर आधारित है। इस कार्यक्रम का एक मुख्य उदेश्य उन गरीबों तक कम कर्जे मे वित्तीय सेवाओं का विस्तार करना है जो औपचारिक बैंकिंग सेवाओं से वंचित रहे है। इस तरह के कार्यक्रम संगी साथियों के दवाब एवं ऋण के लिए अपने सामान को गिरवी रखने के प्रावधान को खत्म करने के विचार पर आधारित है। यह स्वयं सहायता समूह ना केवल ग्रामीण गरीबों के विशिष्ट जरूरत को पूरा करने मे सफल रहे है बल्कि स्थानीय स्तर पर खुद की सहायता करने की क्षमताओं मे भी वृद्धि किया है जो अंततः सशक्तिकारण की ओर ले जाती है।

महिलाओं और गरीबों के लिए गरीबी उन्मूलन एवं आर्थिक संसाधन के लिए कारगर रणनीति के रूप मे माइक्रो फ़ाइनेंस को व्यापक मान्यता मिली है। विगत दस सालों मे यह प्रश्न लगातार उठ रहा है की क्या माइक्रो फ़ाइनेंस गरीबों और विशेषकर गरीब महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सबसे कारगर साधन है? विकास के लिए काम करने वाले पेशेवर लोगों के समूह चाहे वो भारत के हो या अन्य तीसरी दुनिया के देश हो यह सवाल लगातार उठा रहे है की जिस तरह से माइक्रो फ़ाइनेंस को गरीबी दूर करने के संभावना के तौर पर देखा जा रहा है उससे राज्य और अन्य सरकारी संस्थाओं के ने गरीबो के रोजगार एवं जीवन यापन के साधनो के मुद्दों को एक तरह से दरकिनार कर दिया है।

सशक्तिकरण के लिए ऋण का अर्थ है की ऋण संबंधी गतिविधियों के इर्द गिर्द लोगों को जोड़ा जाय एवं उनकी पैसे के प्रबंधन संबंधी क्षमताओं को बढ़ाया जाए। इससे मुख्य बिन्दु इस पर केन्द्रित है की गरीब अपने फंड को खुद से संगठित अपनी क्षमताओं को बढ़ा सकें।

वित्त तक पहुँच के सीमित क्षेत्र से आगे बढ़कर यह समूह मे शामिल महिलाओं को पैसे का लेनदेन सिखाता है। इससे महिलाओं की क्षमताओं मे वृद्धि होती है और उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। इससे उनका स्थानीय प्रशासन मे हिस्सेदारी लोगों की बढ़ती है। इन सबसे लोगों के माइक्रो फ़ाइनेंस अपने आर्थिक सीमाओं से आगे निकलकर सामाजिक बदलाव का साधन बन जाता है।

सरकार की तरफ से यह कोशिश की जा रही है कि विभिन्न गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम के द्वारा गरीबों की सहायता की जा सकें। लेकिन इन कार्यक्रमों मे बहुत कम सफलता मिली है। इन कार्यक्रमों मे ज़्यादातर कार्यक्रम लक्ष्य आधारित है जिसमें लोन देने की प्रक्रिया काफी जटिल होती है। निगरानी और परिवेक्षण के समुचित उपाय नहीं किए जाते है। चुकी ग्रामीण इलाकों मे रहने वाले गरीबों के ऋण संबंधी जरूरत किसी परियोजना आधारित दृष्टीकोण की बहुत स्पष्ट सीमाए है। इस तरह के दृष्टीकोण संगठित क्षेत्र मे ज्यादा कारगर होते है। इस सीमाओ को देखते हुए स्वंय सहायता समूह द्वारा अनौपचारिक तरीके से ऋण उपलब्ध कराने की जरूरत बनी। ग्रामीण गरीबों ने गैर सरकारी संस्थानो की सहायता से आर्थिक एवं वित्तीय मजबूती के लिए स्वंय सहायता समूह मे निहित समभावनाओं को प्रदर्शित किया है। बहुत से अध्ययनों ने यह दिखाया है की महिला सशक्तिकरण एवं ऋण की उपलब्धता के बीच सकारात्मक संबंध है।

महिला सशक्तिकरण एवं सूक्ष्म वित्त के सन्दर्भ में उपरोक्त विश्लेषण के पश्चात् कहा जा सकता है कि आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं के सामने 'सूक्ष्म वित्त' एक वरदान के रूप सामने आया है। अब इसे कार्यान्वित करने वाली संस्थाओं पर निर्भर है कि वे इसे कितना सार्थक बनाते हैं। अतः सरकार को चाहिए की 'सूक्ष्म वित्त' को जरुरत मंद महिलाओं तक पहुँचाने हेतु विशेष प्रयास करे एवं इसके माध्यम से 'महिला सशक्तिकरण' की योजना से अधिक से अधिक आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को जोड़ा जा सके।

संदर्भ:

1. करमाकर, के जी (2017) *भारत में सूक्ष्म वित्त,* सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. *योजना,* (2016), ''नारी सशक्तिकरण'', वर्षः 60, अंक 9
3. Ahmad, Jamil, (2008), "Gender Inequality and Women Empowerment: A Review", in *NewDimensions of Women Empowerment* Chapter, p.129A137, Deep and Deep Publication, NewDelhi.
4. Ahmad, Sayed Noman, (2008), "Empowerment of Women Through Employment – An Overview", in *New Dimensions of Women Empowerment*,Chapter 19, p. 282A290, Deep and DeepPublication, New Delhi.
5. Akhtar, S.M. Jawed (2006), "Empowerment ofWomen in India : Issues and Challenges", in *NewDimensions of Women Empowerment*, Chapter 8,p. 96A113, Deep and Deep Publications, New Delhi.
6. Batliwala S. (1994). "The meaning of women"s empowerment: new concepts from action" In *Population Policies Reconsidered: Health, Empowerment and Rights*, Sen G, Germaine A,Chen LC (eds). Harvard Center for Population and Development Studies: Harvard.

7. Chandra, Shanti Kohli, (1991), *Development of Women Entrepreneurship in India*, Mittal Publication, New Delhi, p. 70.
8. Chaudhari, Rajender (2005), "Lijjat and Women"s Empowerment – Beyond the Obvious", *Economicand Political Weekly*, 40(6) p. 579A583.
9. Christabell, P.J., (2009), *Women Empowerment through Capacity Building: The Role ofMicrofinance*, Concept Publishing Company, New Delhi.
10. Chaudhary, Suman Kalyan, (2011), "Microfinance Reaching the Poor", in *SelfAhelp groups andMicroACredit Institutions*, Discovery Publishing House, New Delhi.
11. Ewnice, B. Lilly Grace, (2011), "Women Entrepreneurs in Rural India – Challenges and Opportunities", *Women Empowerment ThroughSelfAHelp Groups and Microfinance*, Chapter 8, The Associated Publishers.
12. Jeyanthi, (1991), "Women Entrepreneurs and Micro Credit" in *Kurukshetra*, March,1999.
13. Monika, Tushir and Sumita Chadda, (2007), *Roleof Micro Finance to Uplift the Economic Conditionof Women Households in Haryana ThroughSHG*, Published in *Southern Economist*, Vol. 46,No. 7, August, 2007, p. 29.
14. https://www.researchgate.net/publication/314224027_The_process_of_women_empowerment_in_microfinance_Definitions_implications_and_downsides/link/5b3c7a490f7e9b0df5ec91
15. http://www.cds.ac.in/krpcds/w38.pdf
16. http://nirdpr.org.in/nird_docs/jrd/hindi/grameenvikas261016.pdf